निंदा पुराण

एस.सी.गुलाटी
अनुभाग अधिकारी

प्रिय भक्तजनों,

आशा करते हैं आप सभी श्री निंदा देवी के परम उपासक हैं । अतएव निंदा पुराण के माध्यम से हम उनके विस्तृत स्वरूप, गुण एवं लौकिक घटनाओं को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं । यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होगी । तब तक आप नीचे दिए छोटे स्वरूप का पठन कर सकते हैं ।

श्री निंदा देवी का उद्भव मनुष्य हृदय में माना जाता है । इनका वाहन मन है और जिह्वा इनका विशेष अस्त्र । इनकी माँ का नाम ईर्ष्या एवं पिता द्वेष हैं । प्रशंसा, सम्मान एवं प्रेम इनके परम शत्रु हैं । अब हम आपको इनके विभिन्न अवतारों से अवगत कराते हैं ।

पुरातन काल में दो पड़ोसी खुशी से रहते थे । कालान्तर में कालोनियों का विकास हुआ और तब इतने बड़े परिसर में मनोरंजन के रूप में अड़ोसी-पड़ोसी निंदा के नाम से आप विख्यात हुए । ठीक इसी प्रकार विद्यार्थी वर्ग ने सर्वनिंदा के नाम से इन्हें अपनाकर अपने सर का बोझ हल्का कर लिया । अब वे जब चाहें किताबों की, पढ़ाने वाले मास्टरों की या उनसे संबंधित किसी वर्ग की निंदा कर अपने कर्तव्य से विमुख हो सकते हैं । पारिवारिक क्षेत्र में आप सास-बहू निंदा के नाम से जानी जाती हैं । आज के युग में तो आप इस स्वरूप को ले चलचित्र पर भी दर्शन देती हैं । ऑफिसों में आप कर्मचारियों के मध्य बॉस निंदा एवं अफसरों के मध्य सहकर्मी निंदा के नाम से विख्यात हैं । वस्तुतः आप सर्वव्यापी हैं । भारतवर्ष में विशेषकर आप देश निंदा एवं महापुरूष निंदा के रूप में सफलता प्राप्ति के सशक्त साधनों में से एक हैं । श्री निंदा देवी के अनेकानेक रूप प्रत्येक व्यक्ति के जीवन काल के उन सभी क्षणों को सहज ही हर लेते हैं जो वह हँसकर एवं दूसरों के कार्यों की प्रशंसा कर व्यर्थ कर देता है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आप मनुष्यों के प्राणों में निवास करती हैं ।

निंदा देवी की जय हो । जय हो उस महान शक्ति की जिसके फलस्वरूप हम इस नए युग में कृत्रिम आनन्द को प्राप्त करते हैं। यह विडंबना ही है कि आपके लिए आपके शत्रु प्रशंसा का सहारा लिया जा रहा है । अब कहीं उपर्युक्त समस्त कथनों में आप ही व्याप्त हों तो इसका ज्ञान भक्तजन स्वयं करें ।